

विषयानुक्रम

विषय	पृष्ठ
प्रस्तावना	i-xix
सम्पादकीय	xx-xxxii
मंगलाचरण	1
आराधना का स्वरूप	1
आराधना के भेद	1
दर्शनाराधना और ज्ञानाराधना में अन्तर	1
मिथ्यादृष्टि जीव ज्ञान का आराधक नहीं	2
संयम की आराधना और तपाराधना में अन्तर	2
अविरत-सम्यग्दृष्टि का तप कार्यकारी नहीं	2
चारित्राराधना में सभी आराधनायें गर्भित हैं	2
सम्यक्त्व का स्वरूप	3
तप का स्वरूप	3
यथाख्यात चारित्र का सार निर्वाण	3
निर्वाण का सार	3
प्रवचन का सार आराधना	4
नित्य परिकर्म करने का निर्देश	5
पीठिका समाप्त	6
मरण के भेद	6
पाँचप्रकार के मरण	6
पण्डितपण्डितमरण एवं बालपण्डितमरण के स्वामी	6
प्रारम्भिक तीन मरणों की जिनदेव के द्वारा प्रशंसा	6
बालमरण और बाल-बालमरण के स्वामी	7
दर्शनाराधना वर्णन	7
सूत्र का स्वरूप	7
सूत्र व्याख्यान का अधिकारी	8

1. अर्हाधिकार	16-17
सल्लेखना के लिये अर्हता	16
2. लिङ्गाधिकार	18-22
औत्सर्गिक-लिङ्ग वर्णन	18
स्त्रियों के लिङ्ग	18
लिङ्ग के गुण	19
अचेलता वर्णन एवं गुण	19
अपवाद-लिङ्ग	20
केशलोच-प्रकरण	20
शरीर व्युत्सृष्टता-प्रकरण	21
प्रतिलेखना प्रकरण	21
प्रतिलेखना का लक्षण एवं गुण	22
3. शिक्षाधिकार	23
शिक्षा का निर्देश	23
शिक्षा के गुण	23
आत्मज्ञान न करने से हानि	23
आत्मज्ञान करने से लाभ	23
4. विनयाधिकार	24-30
विनययुक्त स्वाध्याय से लाभ	24
निश्चल कौन?	24
सम्यग्ज्ञान से लाभ	24
ज्ञानी एवं अज्ञानी के त्याग में अन्तर	25
स्वाध्याय-भावना से लाभ	25
धर्मोपदेश का निर्देश	25
विनय के भेद	25
ज्ञानविनय के प्रकार	25
सम्यक्त्वविनय	26
चारित्रविनय	26
प्रणिधान के भेद	26
इन्द्रिय-प्रणिधान के प्रकार	26

सम्यक्त्व का आराधक	8
जीवद्रव्य-विषयक श्रद्धान करने का नियम	8
सप्त-पदार्थों में श्रद्धान्	8
मिथ्यादृष्टि का आगम में श्रद्धान्	8
अतत्त्व पर श्रद्धान्	9
अतत्त्व-श्रद्धान् के उदाहरण	9
मिथ्यादृष्टि का बालमरण	9
मोक्षमार्ग में मति	9
सम्यक्त्व के अतिचार	9
सम्यग्दर्शन के गुण	10
दर्शनविनय-कथन	10
सम्यग्दर्शन का आराधक असंयत-सम्यग्दृष्टि भी	10
सम्यक्त्व की आराधना के प्रकार	10
मध्यम और जघन्य सम्यक्त्वाराधना	11
उत्कृष्ट-सम्यक्त्वाराधना	11
जघन्य-सम्यक्त्वाराधना का माहात्म्य	11
सम्यक्त्व का माहात्म्य	11
सम्यक्त्व से पतित होने का फल	11
चारित्रधारी मिथ्यादृष्टि आराधक नहीं	12
मिथ्यात्व व उसके भेद	12
मिथ्यात्व से दूषित अहिंसादिगुण भी निष्फल	12
मिथ्यात्व से दूषित अहिंसादि दोष भी हैं	12
चारित्रवान् मिथ्यादृष्टि मोक्ष का अधिकारी नहीं	13
अव्रती एवं अज्ञानी मिथ्यादृष्टि दीर्घ संसारी	13
बाल-बालमरण का फल	13
भक्तप्रत्याख्यान मरण	13
भक्तप्रत्याख्यान के भेद	14
सविचार भक्तप्रत्याख्यान का प्रारम्भ	14
सूत्रपदों का वर्णन	14

नोइन्दिय-प्रणिधान	26
तपोविनय कथन	27
उपचारविनय के प्रकार	27
कायिकविनय	27
वाचनिकविनय	28
मानसिकविनय	28
परोक्षविनय	29
विनय के योग्य साधक	29
विनय से रहित शिक्षा निष्फल	29
विनय से लाभ	29
विनय के गुण	30
5. समाधि-अधिकार	31-33
समाहित-चित्त का कथन	31
चंचल-चित्त के दोष	31
चंचल-चित्त को रोकने का उपाय समताभाव	32
6. अनियतविहाराधिकार	34-36
अनियत-स्थान में निवास में गुण	34
सम्यग्दर्शन-उत्पत्ति के बाह्यकारण	34
संसार से भय के कारण	34
देशान्तर में विहार का अधिकारी	34
देशान्तर में विहार से लाभ	35
आचार्य की सेवा का निर्देश	35
आचार्यगण में प्रवेश से प्रवीणता	35
आगम के अनुसार समाचारी का निर्देश	36
सल्लेखना के योग्य क्षेत्र	36
अनियतविहारी साधु	36
7. परिणामाधिकार	37-38
आचार्य का कल्याण करने का विचार	37
भक्तप्रत्याख्यान में मति	37
8. परिग्रहात्यागाधिकार	39-40

परिग्रहत्याग की भावना	39
पाँचप्रकार के विवेक से रहित मरण असमाधि	39
पाँचप्रकार के विवेक से सहित मरण समाधि	39
पाँचप्रकार की शुद्धि	40
पाँचप्रकार का विवेक	40
9. श्रिति-अधिकार	41-42
वार्तालाप करने का नियम	41
10. भावना-अधिकार	43-48
पाँचप्रकार की संक्लिष्ट-भावना कथन	43
कन्दर्प-भावना कथन	43
किल्बिषक-भावना कथन	43
आभियोग्य-भावना कथन	43
आसुरी-भावना कथन	44
सम्मोह-भावना कथन	44
संक्लिष्टादि-भावनाओं से देवदुर्गति	44
पाँचप्रकार की असंक्लिष्ट-भावना कथन	44
तपोभावना कथन	45
श्रुतभावना कथन	46
सत्त्व-भावना कथन	46
एकत्व-भावना कथन	47
धृति-भावना कथन	48
11. सल्लेखना-अधिकार	49-62
सल्लेखना के भेद	49
बाह्य (शरीर) सल्लेखना कथन	49
बाह्यतप-कथन	49
अनशनतप के भेद	49
अर्द्धानशनतप के भेद	50
अवमौदर्यतप कथन	50
रसपरित्याग-तप का वर्णन	50
वृत्तिपरिसंख्यान-तप वर्णन	51

कायक्लेश-तप वर्णन	52
स्थानयोग-वर्णन	52
आसनयोग-वर्णन	53
शयनासनयोग-वर्णन	53
विविक्तशयनासन-तप वर्णन	53
शुभयोगी तथा अशुभयोगी में अन्तर	55
बाह्य-तप का महत्त्व	55
सल्लेखना की विधि	57
आचाम्ल आहार का स्वरूप	58
भक्तप्रत्याख्यान का काल	58
आहारत्याग का क्रम	58
अन्तरङ्ग (कषाय) सल्लेखना का स्वरूप	60
कषाय को जीतने के उपाय	60
रागद्वेष के शान्ति के उपाय	61
12. दिशा-अधिकार	63
दिशा-प्रकरण वर्णन	63
13. क्षमाग्रहण-अधिकार	64
क्षमाप्रकरण वर्णन	64
14. अनुशासन अर्थात् आचार्य-अधिकार	65-86
अनुशासन-प्रकरण का वर्णन	65
आचार्यशिक्षा वर्णन	65
गणधर का स्वरूप	66
साधु के लिये त्यागने योग्य क्षेत्र	68
संघशिक्षा का वर्णन	68
वैयावृत्य का स्वरूप	70
वैयावृत्य न करने पर निन्दा	70
वैयावृत्य करने से गुण प्राप्ति	71
गुणपरिणाम पद की व्याख्या	71
वैयावृत्यभक्ति का गुण	72
वैयावृत्यभक्ति का माहात्म्य	73

वैयावृत्य का पात्रलाभगुण	73
वैयावृत्य का तप गुण	73
वैयावृत्य का माहात्म्य	74
अव्युच्छिन्ति कथन	74
वैयावृत्य के फल का माहात्म्य	74
आर्यिकादि स्त्रीसंसर्ग वर्जनीय	75
आर्या के अनुचर में दोष	76
पाँचप्रकार के कुमुनियों से दूर रहने का आदेश	77
पार्श्वस्थादि मुनियों के संसर्ग से हानि	77
संसर्ग से अचेतन वस्तु पर भी प्रभाव	77
दुर्जनों की सङ्गति अनर्थकारी एवं दोषयुक्त	79
सज्जनों की सङ्गति से लाभ	79
कर्णाप्रिय-गुरुवचन ग्रहणीय	81
स्वप्रशंसा से हानि	81
स्वप्रशंसा न करने से लाभ	81
अपने गुणों की प्रशंसा न करने के गुण	82
अपने आचरण से गुणों को प्रकट करने का माहात्म्य	82
परनिन्दा का दोष	83
संयमीजनों की कीर्ति	84
15. परगण में प्रवृत्ति	87-90
परगणचर्या कथन	87
असमाधि के नौ दोष	87
आज्ञाकोपदोष एवं निवारण	87
कठोरवचनदोष	88
कलह एवं परितापनदोष	88
परितापनदोष	88
निर्भयतादोष	88
स्नेहदोष	89
करुणादोष	89
ध्यान में विघ्नता एवं असमाधिमोक्ष	89

16. मार्गणा-अधिकार	91-94
मार्गणा कथन	91
निर्यापक को खोजने में क्षपक का क्रम	91
निर्यापक खोजने में प्रवृत्त क्षपक के गुण	92
समाचारी साधुओं का क्रम	92
क्षपक की परीक्षा का क्रम	93
17. सुस्थित-अधिकार	95-114
निर्यापकाचार्य के गुण	95
आचारवत्त्व गुण का कथन	95
दस-कल्पों का कथन	95
आचारवान् निर्यापकाचार्य से क्षपक को लाभ	96
आधारवान् निर्यापकाचार्य नहीं होने से क्षपक को हानि	96
आधारवत्त्व का कथन	97
अज्ञानी आचार्य का आश्रय लेने में दोष	97
गृहीतार्थज्ञानी आचार्य का कथन	100
व्यवहारवत्त्व गुण का कथन	101
पाँचप्रकार का व्यवहार	101
प्रायश्चित्त देने का क्रम	102
प्रायश्चित्तशास्त्र को जाने बिना प्रायश्चित्त देने में दोष	102
गर्वित-आचार्य के पास जाने का निषेध	102
प्रकुर्वकत्व गुण कथन	103
आय-अपाय-विदर्शित्वगुण कथन	104
अवपीडक-गुण कथन	107
अवपीडक-आचार्य के गुण	107
आचार्य की भद्रता	108
अपरिस्रावी गुण कथन	109
आचार्य के द्वारा साधु का त्याग कैसे?	110
आचार्य के द्वारा आत्मा का त्याग कैसे?	110
आचार्य के द्वारा गण का त्याग कैसे?	111
आचार्य के द्वारा संघ का त्याग कैसे?	111

आचार्य के द्वारा मिथ्यात्व की आराधना कैसे?	111
अपरिसावी-गुण का उपसंहार	111
निर्यापकत्व-गुण का कथन	112
आचार्य के ज्ञान का माहात्म्य	112
सुस्थितगुण का कथन	113
18. उपसंपदा-अधिकार	115-116
उपसंपदा-गुण कथन एवं क्रम	115
19. परीक्षा-अधिकार	116
परीक्षा का कथन	116
20. प्रतिलेखना-अधिकार	116
21. आपृच्छा-अधिकार	117
आपृच्छा-कथन	117
पडिच्छणा-पद की व्याख्या	117
22. प्रत्येषण-अधिकार	118-120
क्षपकों की संख्या	118
आचार्य के द्वारा क्षपक को शिक्षा	118
इन्द्रिय और कषायों को जीतने का उपदेश	118
आचार्य के छत्तीस गुण	119
प्रायश्चित्त से शुद्धि	119
23. आलोचना-अधिकार	121-127
निरवशेष आलोचना	121
आलोचना के क्रम की शिक्षा	121
सामान्य-आलोचना का स्वरूप	121
विशेष-आलोचना का स्वरूप	122
शल्य के गुण-दोष	122
शल्य के भेद	122
भावशल्य के भेद	122
भावशल्य के दोष	123
अपराध को शीघ्र कहना चाहिये	123
शल्य सहित मरण में दोष	123

शल्यरहित में गुण	123
कायोत्सर्ग का उपयोग	125
अप्रशस्त-प्रदेशों में आलोचना का निषेध	126
प्रशस्त-प्रदेशों में आलोचना का नियम	126
क्षपक की आलोचना का क्रम	127
24. आलोचना के गुण-दोष-अधिकार	128-143
आकम्पित-दोष कथन	128
आलोचना के समय मन की प्रवृत्ति	128
दूसरे आलोचना-दोष कथन	129
अनुमानित-दोष-कथन	130
तीसरा आलोचनादोष	131
चतुर्थ आलोचना-दोष	131
पाँचवा आलोचना-दोष	132
छठा आलोचना-दोष	133
सातवाँ आलोचना-दोष	134
आठवाँ आलोचना-दोष	135
बहुजन-नामक आलोचना-दोष	135
नौवाँ अव्यक्त-नामक आलोचनादोष	136
दसवाँ आलोचना-दोष	137
आलोचना की विधि	138
आलोचना के अतिचार	138
आलोचना एवं निन्दा के गुण	139
निर्यापक के द्वारा क्षपक से पृच्छना	140
सावद्य संक्लेश का कथन	141
25. शय्या अर्थात् वसति-अधिकार	144-145
अयोग्य वसति कथन	144
योग्य वसति कथन	144
26. संस्तर-अधिकार	146-147
पृथ्वीमय संस्तर कथन	146
शिलामय संस्तर कथन	146

फलकमय संस्तर कथन	146
तृणमय संस्तर कथन	147
27. निर्यापक-अधिकार	148-156
निर्यापकों का स्वरूप	148
निर्यापक के कार्य	148
परिचारक-यतियों के कार्य	148
कथाओं के प्रकार	149
कथाओं का स्वरूप	149
विक्षेपणी-कथा अनायतनरूप	150
अधिकतम निर्यापकों की संख्या	152
न्यूनतम निर्यापकों की संख्या	153
एक निर्यापक होने पर दोष	153
सल्लेखना स्थान में जाने का फल	154
सल्लेखना-स्थान में न जाने का फल	155
असभ्य-लोगों का क्षपक के समीप जाने का निषेध	155
28. आहार-प्रकाशनाधिकार	157-158
निर्यापक के द्वारा आहार का प्रकाशन	157
29. आहार हानि-अधिकार	159
आहार हानि का कथन	159
30. प्रत्याख्यान-अधिकार	160-162
पानक के भेद	160
आचाम्ल-सेवन का नियम	160
विरेचनसेवन कथन	160
मलशुद्धि कथन	160
क्षपक के द्वारा क्षमायाचना	161
क्षपक के योग्य पानक	162
क्षपक के द्वारा कषाय का त्याग	162
31. क्षमापन-अधिकार	163
मुनिसंघ से क्षमायाचना	163
संघ का लक्षण	163

32. क्षमा प्रदान-अधिकार	164-165
कर्म-निर्जरा के कारण	164
सम्यक्त्व से कर्मनिर्जरा	164
क्षपक को सूरि-शिक्षा	165
33. शिक्षण-अधिकार	166-321
क्षपक के लिये कर्ण में शिक्षा	166
मिथ्यात्व के उदय में मोह का माहात्म्य	167
सम्यक्त्व-भावना का कथन	168
एकाकी सम्यग्दर्शन का माहात्म्य	169
पराभक्ति कथन	170
जिनभक्ति माहात्म्य	170
नमस्कार का माहात्म्य	172
ज्ञानोपयोग का कथन	173
ज्ञान से मन पर नियंत्रण	174
ज्ञानरूपी प्रकाश का माहात्म्य	175
अहिंसाव्रत-पालन का कथन	177
जीवघात से दोष	178
अहिंसा-व्रत का माहात्म्य	178
अहिंसाव्रत के बिना शील आदि की निष्फलता	179
इहलौकिक-हिंसा के दोष	180
हिंसा-संबंधी-क्रियाओं के भेद	182
बंध के भेद	183
जीवाधिकरण के भेद	184
अजीवाधिकरण के भेद	184
निक्षेप के भेद एवं निर्वर्तना का स्वरूप	184
संयोजनाधिकरण एवं निसर्गाधिकरण का कथन	185
अहिंसा की रक्षा के उपाय	185
सत्यव्रत का कथन	186
असत्यवचन के भेद	186
गर्हित-वचन का कथन	188

सावद्य-वचन का कथन	188
सत्य वचन के गुण	189
अचौर्य-महाव्रत का कथन	192
ब्रह्मचर्य-व्रत का कथन	197
अब्रह्म के दस-भेद	197
कामजन्य दोष	198
काम के दस-वेग	200
कामाग्नि का प्रभाव	201
स्त्रीकथा एवं गुण-दोष कथन	209
देह की अशुचित्व का कथन	222
शरीर की रचना का क्रम	223
गर्भ का स्थान एवं उसकी अशुचिता	224
जन्म का कथन	226
जन्म के पश्चात् शरीर वृद्धि का कथन	226
शरीर के अवयवों का कथन	227
मल निर्गमन कथन	231
शरीर की व्याधि-कथन	233
अध्रुवत्व-कथन	233
शरीर की अस्थिरता	234
वृद्धसेवा कथन	236
वृद्धों का संसर्ग लाभकारी	236
स्त्री संसर्ग से दोष	239
अपरिग्रह महाव्रत कथन	246
अभ्यन्तर-परिग्रह के भेद	246
बाह्य-परिग्रह के भेद	246
दसप्रकार का कल्प	247
आचेलक्य स्थिति कल्प	247
परिग्रह के वश अकरणीय-कार्य	248
परिग्रह के वश अनेक-भव में दुःख	256
परिग्रह-त्याग से लाभ	256

परिग्रह-त्याग से अतिशय-सुख-प्राप्ति	259
महाव्रत-नाम की सार्थकता	260
अष्टप्रवचन मातृका कथन	260
मन, वचन-गुप्ति-कथन	260
काय-गुप्ति-कथन	260
ईर्यासमिति-कथन	261
भाषा-समिति-कथन	261
सत्यवचन के भेद	261
असत्यादि तीन-वचनों का लक्षण	262
असत्यमृषा वचन के नौ भेद	262
एषणा-समिति-कथन	262
आदाननिक्षेपण-समिति-कथन	262
प्रतिष्ठापन-समिति-कथन	263
अहिंसा-महाव्रत की भावनाएँ	264
सत्य-महाव्रत की भावनाएँ	264
अचौर्य-महाव्रत की भावनाएँ	264
ब्रह्मचर्य-महाव्रत की भावनाएँ	265
अपरिग्रह-महाव्रत की भावनाएँ	265
भावना का माहात्म्य	265
शल्य-महाव्रतों का घातक	266
शल्यों के भेद	266
प्रशस्त-निदान कथन	266
अप्रशस्त निदान कथन	266
भोगनिदान कथन	267
कुलाभिमान दूर करने का उपाय	268
भोगों के दोषों का चिन्तन करने से भोग-निदान नहीं	271
भोग-निदान के दोष	271
भोग-निदान से मुनिपद की निन्दा	272
भोग सबसे बड़े शत्रु	278
निदान न करने में गुण	280

मायाशल्य-दोष का दृष्टान्त	280
क्षपक का मोक्ष नगर में प्रवेश	281
आचार्य द्वारा संघ की रक्षा	281
अवसन्न साधु लक्षण	282
पार्श्वस्थ साधु कथन	282
कुशील मुनि कथन	283
यथाच्छन्द मुनि का स्वरूप	285
संसक्त मुनि का कथन	286
संसक्त मुनि के दृष्टान्त	287
ज्ञान से दोषों का निवारण	290
इन्द्रिय और कषाय से युक्त ज्ञान दोष का कारण	291
बाह्य एवं अभ्यन्तर-शुद्धि कथन	293
इन्द्रिय-सुख अनर्थ के कारण	294
क्रोध के दोष	295
मान के दोष	298
माया के दोष	300
लोभ के दोष	301
इन्द्रिय और कषाय को नियंत्रण करने के उपाय	302
क्रोध को जीतने का उपाय	307
मान के प्रतिपक्षी-परिणामों का कथन	309
माया के विरोधी परिणामों का कथन	310
निद्रा को जीतने का उपाय	311
आलस्य के दोष	314
तप के गुण	315
आचार्य के उपदेश को क्षपक द्वारा ग्रहण करने का संकल्प	319
34. सारणा-अधिकार	322-359
क्षपक के योग्य-आहार	322
क्षपक के रोगों का उपचार	323
क्षपक की परीक्षा के लिये प्रश्न एवं उपचार	325
क्षपक को संयम में लगाने का प्रयास	326

नरकों की उष्णता एवं शीतता की महत्ता	336
नरकों में शारीरिक वेदना	337
तिर्यञ्चगति के दुःखों का कथन	340
मनुष्यगति के दुःख	341
देवगति के दुःख	343
वेदनाओं का स्मरण एवं शमन	344
व्रत भंग महान् दोष	351
आहार हिंसादि दोषदायक	352
आहार के भेद	355
आहार में स्वल्पसुख होने का कारण	356
अयोग्य-आहार से हानि	357
शरीर से ममत्व-त्याग का उपदेश	357
35. कवच-अधिकार	360-362
36. समभाव-अधिकार	363-364
शरीर आदि त्याज्य	363
मैत्री आदि भावनाओं का कथन	364
37. ध्यान-अधिकार	365-407
शुभध्यान की सामग्री	365
धर्मध्यान एवं शुक्लध्यान के भेद	365
क्षपक के लिये आर्तध्यान और रौद्रध्यान करने का निषेध	365
आर्त एवं रौद्र ध्यान के भेद	365
ध्यान की सामग्री	366
धर्मध्यान के प्रकार	367
धर्मध्यान का लक्षण	367
धर्मध्यान का आलम्बन	367
आज्ञाविचय-धर्मध्यान का स्वरूप	367
अपायविचय-धर्मध्यान का स्वरूप	368
विपाकविचय-धर्मध्यान का स्वरूप	368
संस्थानविचय-धर्मध्यान का स्वरूप	368
अध्रुवादि-अनुप्रेक्षाओं का क्रम	368

अध्वानुप्रेक्षा का कथन	369
अशरणानुप्रेक्षा का कथन	371
एकत्वानुप्रेक्षा का कथन	375
अन्यत्वानुप्रेक्षा का कथन	376
शत्रुता एवं मित्रता, उपकार एवं अपकार	378
शत्रु एवं मित्र का लक्षण	378
बन्धुओं में शत्रु का लक्षण	378
संसारानुप्रेक्षा का कथन	379
भवसंसार का कथन	380
द्रव्यपरिवर्तन कथन	380
क्षेत्रसंसार कथन	380
कालपरिवर्तन कथन	381
क्षेत्र संसाररूप स्पन्दन संसार	381
भव संसार कथन	381
संसार से भय	382
लोकानुप्रेक्षा कथन	385
अशुभत्व-अनुप्रेक्षा कथन	388
अर्थ की अशुभता	388
काम की अशुभता	388
शरीर की अशुभता	389
आस्रवानुप्रेक्षा कथन	390
आस्रव एवं मिथ्यात्व का स्वरूप	390
असंयम का स्वरूप	391
रागद्वेष का माहात्म्य	391
योग-शब्द का अर्थ	392
आस्रव के द्वार	392
संवरानुप्रेक्षा कथन	392
प्रमाद-संवर का कथन	393
गुप्ति-संवर का कारण	394
निर्जरानुप्रेक्षा कथन	394

धर्मानुप्रेक्षा कथन	397
बोधिदुर्लभानुप्रेक्षा-कथन	399
मनुष्य-पर्याय की दुर्लभता का कारण	399
धर्मध्यान के आलम्बन	401
शुक्लध्यान-कथन	401
शुक्लध्यान के प्रकार	401
पृथक्त्व का लक्षण	402
सवितर्क का लक्षण	402
सवीचार का लक्षण	402
एकत्व का लक्षण	402
वितर्क एवं अवीचार का लक्षण	403
सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति-शुक्लध्यान-कथन	403
ध्यान का माहात्म्य	404
38. लेश्या-अधिकार	408-412
क्षपक की लेश्या-विशुद्धि	408
39. आराधना का फल	413-420
अवसन्नादि यतियों का स्वरूप	417
मरणकाल में सन्मार्ग से च्युत क्षपक की गति	417
40. शरीर त्याग अधिकार	421-463
स्थितिकल्प-कथन	421
निषीधिका का लक्षण	421
आर्यिकाओं की संन्यास-विधि कथन	423
संस्तरे के विषम होने पर दोष	425
उपकरण स्थापित करने के गुण	425
नक्षत्रों की गणना एवं क्षपक का मरण	426
गण-रक्षणार्थ पुतले देने का विधान	426
क्षपक के शव से उसकी गति का ज्ञान	427
आराधक-क्षपक का स्तवन	428
निर्यापक की प्रशंसा	429
निर्यापकों को प्राप्त होने वाला फल	429

क्षपक को देखने जाने का फल	429
क्षपक एक तीर्थ है	430
अविचार भक्तप्रत्याख्यान कथन	430
अविचार भक्तप्रत्याख्यान के भेद	431
निरुद्ध-अविचार-भक्तप्रत्याख्यान का स्वामी	431
निरुद्धतर-अविचार-भक्तप्रत्याख्यान की विधि	432
परम-निरुद्ध अविचार-भक्तप्रत्याख्यान की विधि	433
इंगिनीमरण की विधि	435
प्रायोपगमन-मरण की विधि	441
बालपण्डितमरण कथन	444
द्वादश-गृहस्थधर्म	444
बालपण्डितमरण का फल	446
पण्डितपण्डितमरण कथन	446
ध्यान की बाह्य सामग्री	446
कर्मक्षय का क्रम	447
योगनिरोध का क्रम	452
सिद्धपरमेष्ठी के गुण एवं स्तवन	455
अतीन्द्रिय-सुख-कथन	459
उत्कृष्ट-आराधना का फल	461
मध्यम-आराधना का फल	461
जघन्य आराधना का फल	461
रचयिता का परिचय एवं लघुता प्रदर्शन	461
परिशिष्ट 1	464-466
परिशिष्ट 2	467-469
परिशिष्ट 3	470
गाथानुक्रमणिका	471-535